: षष्ठ अध्याय :

उपसंहार

षष्ठ अध्याय

''उपसंहार''

डॉ. नरेन्द्र कोहली के हिन्दी साहित्य में साहित्य मानव जीवन की अभिव्यक्ति है। वक्र विशिष्ट भावभंगिमा की अभिव्यक्ति साहित्य में है। व्यंग्य एक सहज अभिव्यक्ति है। हर साहित्य के बीज रूप में व्यंग्य होता ही है। आज की सदी में व्यंग्य लेखन के प्रतिमान बदल रह है। समकालीन विसंगत वातावरण में व्यंग्य लेखन रचना कर्म बन गया है। हिंदी साहित्य के अंर्तगत आज तक काफी मात्रा में व्यंग्य लेखन का कार्य किया है। आज व्यंग्य विधा उपेक्षा से हटकर सभी विधाओं में सरताज विधा बन गई है, किंतु खेद की बात है, आज भी इसके सैध्दधानिक पक्ष को लेकर बहुत गंभीर बहस नहीं हुई है।

मूल्यांकन की दृष्टि से व्यंग्य साहित्य उपेक्षित रहा है। इस दृष्टि से जो मूल्यांकन का प्रयास हुआ है, वह भी बहुत कम मात्रा में है।

समसामायिक परिस्थितियों का जीवन से घनिष्ठ संबंध होता है। जब यें परिस्थितियाँ ही विकराल रूप धारण कर लें, तो फिर जीवन में क्या रह जाता है?

परिस्थितियों में व्याप्त विकृतियों, विसंगतियों, अनीतियों तथा अन्याय आदि ने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में भारतेंदु युगीन व्यंग्य की पुनरावृत्ति की है। आज यद्यपि देश स्वंतत्र है और कहने को प्रजातंत्र अर्थात जनता का राज्य है। विडंबना यह है कि, आज भी स्थिति जैसी की वैसी त्रासद बनी हुई हैं। भ्रष्ट राजतंत्र, पुलिस, अफसरशाही, रिश्वतखोरी, लालफीत शाही का आतंक बना हुआ है। सामाजिक वर्गभेद, शोषकों का अत्याचार, शोषितों की पीडा, अभिजात्यों का दलितों पर होनेवाला अन्याय, धार्मिक संकीर्णता आदि ने जोर पकड लिया है।

सन १९६१ के पश्चात् अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार की रफ्तार तेज हो गयी है। जनता में जब तक पुराने घपले–घोटाले की जानकारी पहुँचे, तब तक नया घोटाला सामने आ जाता है। आज के युग की पीढ़ी के साहित्यकारों को व्यंग्य रचना के लिए समाज से, संस्कृति से और वर्तमान राजनीति से पर्याप्त सामग्री मिलती है। साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र

कोहली ने अन्य विधाओं के अंर्तगत भी और स्वतंत्र रूप में भी 'व्यंग्य' रचनाएँ की है। आधुनिक युग के साहित्यकारोंने व्यंग्य का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है।

- हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का लेखन अब पूरे विकास पर है। पाठक लोग हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवींद्रनाथ त्यागी, केशवचंद्र वर्मा आदि रचनाकारों को मात्र हँसी–मजाक का लेखन न मानकर जीवन को संजिंदगी से जीनेवाले और उसकी विसंगतियों को निर्मतासे प्रहार करने वाले रचनाकार मानते है। व्यंग्य जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने वाली विशिष्टता की गरिमा प्राप्त करके और जीवन के समग्र अनुभव में लीन होकर ही समझा जा सकता है। हिन्दी साहित्य में व्यंग्य किसी प्रकार के बुध्दि–विलास का साधन नही रह गया है, बल्कि समूचे परिवेश के विरोधाभासों को और अकांक्षा को जगाने का कार्य कर रहा है।
- व्यंग्य लेखक समाज का सच्चा सचेतक और उन्नायक है। वह समाज की पतनोन्मुखी अवस्था पर केवल उपहास करके ही संतोष नहीं करता, तो समस्या की तह में पैठकर मिथ्याचार, पाखण्ड, अन्याय की बखिया उधेड़ता है। 'व्यंग्य' 'सुधार– का कोरा उपदेश नहीं होता, जो एक कान से सुना दूसरे कान से निकाल दिया। वह तीक्ष्ण बाण की अनी की तरह होता है, जो हृदय में चुभकर सालती रहती हैं। वह अनी नावक के तीर की अनी है, जो गंभीर घाव करती है और पूरे शरीर में फैलती हैं।
- समाज में जब आदर्श और यथार्थ के बीच विचार और कार्य के बीच अंतर्विरोधों की संघर्षमयी स्थिति होती है, तब व्यंग्य की सृष्टि होती है। जहाँ पर यथार्थ संवेदनशीलता, गंभीरता, बौध्दिकता, सांकेतिकता, तटस्थ विश्लेषण क्षमता और भाषा की प्रौढता, अधिकाधिक होती है, वहाँ व्यंग्य अधिक प्रखर बन जाता है। ऐसे में व्यंग्य की धार अधिक पैनी होती है।

- हिंदी में व्यंग्य के लिए जितने साहित्य प्रतिरूप है। शायद उतने अन्य किसी के साथ नहीं हैं। व्यंग्य के लिए आमतौर पर प्रयोग किए गए शब्द है, व्यंग्य, व्यंग, उपहास, कटाक्ष, खिल्ली, ताना, वक्रोक्ति, वाग्वैदग्ध्य, विडंबना, विकृति, व्यंजना आदि। भारतीय साहित्य में व्यंग्य वेदों से लेकर आज के समय तक बराबर विद्यमान है। भारतीय आचार्यो ने व्यंग्य का स्वतंत्र रूप से विचार नहीं किया है। व्यंग्य की स्थितियों का वर्णन भारतीय आचार्यों ने 'बीज' रूप में दिया है। ध्वनि और वक्रोक्ति में व्यंग्य बीज रू प में मिलता है। वक्रोक्ति अर्थात 'वक्र उक्ति' के प्रतिपादन में ही व्यंग्य छिपा है।

- पाश्चात्य साहित्य में भी व्यंग्य काफी समय पूर्व से मिलता है। रोम के प्रथम व्यंग्यकार लूसी सियना ने तत्कालीन राजनीति, राजनीतिज्ञो की प्रवृत्ति, धार्मिकता, अंधविश्वासों आदि पर व्यंग्य रचनाएँ लिखी है। उन्होंने समस्त मानव जीवन की व्यंग्यव्दारा आलोचना की है। जोनाथन, स्विफ्ट, सरर्पेटस, बुटहाऊस, मार्कट्वेन, हेनरी सिसील, रिचर्ड गोर्डन, फ्राय, माइक्स, बैरी, मैकडानल, डिकिन्स, लीकाक, वाल्टेयर, पार्किसन, पीटर, जेरोम, गोल्डस्मिथ, फिन्ले, पीटर, शैली वर्मन आदि रचनाकार व्यंग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं।

- वैदिक यु के साहित्य में अंध धार्मिकता एवं धर्म की आड में फैली विसंगतियों पर व्यंग्य मिलता है। चार्वाक ने वैदिक कर्मकण्डों की खिल्ली उड़ाई है। संस्कृत साहित्य में पुराणों और आख्यानों में तत्कालीन कुरीतियों और कुप्रथाओं पर व्यंग्य किया हुआ है। 'हितोपदेश' 'पंचतंत्र' शुद्रक के 'मृच्छकटिक' आदि में व्यंग्य के प्रयोग का माध्यम विदूषक रहा है। प्राकृत साहित्य में 'हरिभद्र सूरी' के 'दशवैकालिका टाक' एवं 'उपदेश पद' अंर्तगत धूर्तों की पोल खोल कर सशक्त प्रहार किए हैं। अपभ्रंश साहित्य में 'चौपाइयों' एवं 'चर्यागीतों' में सिद्धों ने तात्कालीन कुरीतियों विसंगतियों का उपहास उड़ाते हुए व्यंग्योक्तियाँ लिखी है।

- हिंदी–साहित्य के आदिकाल में सशक्त व्यंग्य साहित्य की रचना नहीं हो सकी। इस काल में छिटपुट में जितना भी व्यंग्य रचा गया है, उसका स्वरूप निंदा .... का रहा है। भक्तिकाल में कबीर बहुत सशक्त व्यंग्यकार हुए है। इस युग के तुलसी और सूर की रचनाओं में भी व्यंग्य मिलता है। रीतिकाल में बिहारी, रहीम तथा वृंद आदि कवियों ने भी अपने काव्य में व्यंग्य का प्रयोग किया है। बिहारी, रहीम, वृंद की मार्मिक उक्तियों में व्यंग्य की प्रधानता रही है।

- आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य का श्रेय भारतेंदु तथा उनके मंडल को दिया जाता है। भारतेंदु युगीन व्यंग्यकारों ने सामाजिक परिस्थितियों का जमकर मुकाबला किया है। व्दिवेदी युगीन व्यंग्य में आक्रोश अधिक है, हास्य का भाव कम है। भारतेंदु युगीन व्यंग्यकारों ने सामाजिक परिस्थितियों का जमकर मुकाबला किया है। व्दिवेदी युगीन व्यंग्य में आक्रोश अधिक है, हास्य का भाव कम है। निराला छायावाद एवं प्रगतिवाद दोनों के ही प्रणेता थे। उन्होंने 'सरोज स्मृति' में बहुत तीखा व्यंग्य किया है। परंतु यह युग गद्य साहित्य में व्यंग्य का युग नहीं रहा है। इस युग की काव्य रचनाओं में व्यंग्य अधिक दृष्टिगत होता है।

- स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य 'दिन दूना रात चौगुना' फला–फूला यह बात साहित्य के लिए नाज का विषय भले ही हो, परंतु जीवन के लिए कदापि नहीं, क्योंकि व्यंग्य मानव की विसंगतियों एवं विकृतियों को ही पकड़ता है। स्वंतत्रता प्राप्त होते ही नेता वर्ग शासन वर्ग बन गया। नौकरशाही एक ओर नेतओं की सहयोगी बनी तो दूसरी ओर पूँजीपतियों की भी सहायक बनी। नेता, नौकरशाह और पूँजी पति तीनों की साठ–गाँठ के परिणाम स्वरूप महँगाई, काला बाजारी, मिलावटखोरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, लालफीत शाही आदि का नंगानाच आरंभ हो गया। मूल्यहीन राजनीति का प्रभाव हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों पर

भी पड़ा है। तत्कालीन काल के व्यंग्यकारों को अपनी रचनाओं के लिए इससे अधिकाधिक सामग्री मिलती रही और उन्होंने प्रचूर मात्रा में व्यंग्य रचनाएँ की है।

- स्वातंत्र्योत्तर काल में स्वतंत्र रूप से विकसित हो रही इस विधा को अधिक विकसित करनेवाले व्यंग्य रचनाकारों में सर्वश्री, हरिशंकर परसाई, रवींद्रनाथ त्यागी, शरद जोशी, बरसानेलाल चतुर्वेदी, डॉ. नरेन्द्र कोहली, इंद्रनाथ मदान, श्रीलाल शुक्ल, शंकर पुणतांबेकर, लतीफ घोंघी, गोपाल चतुर्वेदी, केशवचंद्र वर्मा, बालेंदुशेखर तिवारी, के. पी. सक्सेना, सुदर्शन मजीठिया, मधुसुदन पाटील, संतोष खरे, यशवंत कोठारी, श्याम गोयन्का, लक्ष्मीकांत वैष्णव, ज्ञान चतुर्वेदी, यशवंत कोठारी, श्याम गोइन्का, लक्ष्मीकांत वैष्णव, ज्ञान चतुर्वेदी, आदि प्रमुख है। इन व्यंग्यकारोंने राजतीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, धार्मिक, साहित्यिक, शैक्षिक आदि जीवन के सभी क्षेत्रों को बेपर्दा करते हुए उसके वास्तव को व्यक्त किया है। इन्होंने समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आदि के विरूध्द संघर्ष की प्रेरणा दी है।

- जब तक देश को मुक्त कराने का उद्देश्य रहा तब गांधीवाद, समाजवाद, परंपरावाद और आधुनिकतावाद सब धाराये परस्पर टकराव और विरोध के बिना अविरल प्रवाहीत होती रहीं। आजादी के पश्चात् वह निरर्थक हो गयी हैं। स्वतंत्रता का ध्येय तो अंतिम मंजिल तक पहुँचने का एक पड़ाव मात्र था। वास्तव में राष्ट्र के सम्मुख वर्गहीन, शोषणमुक्त, समृध्दशाली, सुखी समाज और प्रगतिशील समाज की स्थापना का ध्येय था, कि इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक था, कि गतानुगत संस्कारों, रूढियों, सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों, पिछडेपन, कुपमंडूकता तथा विदेशी मानसिक दासता से छुटकारा पाया जाए। इसके लिए आत्मत्याग, चारित्रिक दृढता तथा स्वार्थत्याग के दृढ संकल्प की आवश्यकता थी। किंतु विडंबना यह रही कि इसके एकदम विपरीत हुआ। स्वतंत्रता मिलते ही समस्त

राष्ट्र और समाज स्वार्थान्धता, और आपाधापी की दलदल में फँस गया जिससे उबर पाना संभव नहीं दिखाई देता।

- स्वतंत्रता के पश्चात् एक ओर विभाजन की असहनीय पीड़ा और दूसरी ओर मूँह फाड़े खड़ी अनेक समस्याओं ने परंपराओं को छिन्न–भिन्न कर दिया। इसी समय एक विशिष्ट स्थिति ऐसी भी उत्पन्न हुई, कि नई पीढ़ि का युवक सांस्कृतिक दायित्व के प्रति अनुकूल नही था, वह तो परंपरागत समाज और संस्कृति से भिन्न कुछ नई रचना करना चाहता था। स्वातंत्र्योत्तर युवा पीढ़ी में परंपरागत संस्कृति के प्रति तनिक भी आस्था नही थी। अत्याधुनिक और परंपराओं के परस्पर टकराव से समाज और आधुनिक समाज के बीच की दरार चौडी हो गयी। इन अंतर्विरोध ने एक विचित्र से नये संकट को जन्म दिया है। पुरानी मान्यताएँ तथा धारणाएँ टूट रहीं थी, नई बन नहीं पा रही थी। जो कुछ आधुनिकता के नाम बन पर रहा वह पश्चिम की नकल मात्र रहा है। इन्हीं सांस्कृतिक विषम परिस्थितियों को व्यंग्यकारों ने अपना लक्ष्य बनाया है। विदेश से लौटे भारतीय अपने साथ विदेशी सामान लेकर लौटते है और बड़े गर्व के साथ उनकी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करते है, विदेशी के गुण गाते है। विदेशी भाषा, संस्कृति ने भारतीयों के मन में मानसिक दासता कूट–कूट कर भर दी है। आधुनिक समाज अपने संतान को कॅवेण्ट में पढ़ाकर फर्राटे से अंग्रेजी बोलना सिखाना चाहते है। अंग्रेजी चलचित्र देखना गर्व की बात समझी जाती है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण फैशन परास्त समाज में अश्लीलता ने जोर पकड़ लिया है जिसका चित्र पत्र–पत्रिकाओं में दृष्टिगत होता है।

- नारी विषयक देखने का दृष्टिकोण बदल गया है। क्लब, डिनर, डिस्को आदि में नारी को अश्लीलता से देखा जाता रहा है। संस्कृति के कारण नव एवं पुराने पीढ़ियों में टकराहट पैदा हो रही है। पाश्चात्य–संस्कृति का इतना प्रभाव दिखाई देता है, कि भारतीय कला–संगीत और विद्याा इतिहास जमा हो गयी है। इसी कारण नयी एवं पुरानी सांस्कृतिक मान्यताओं का परस्पर टकराव हो रहा है। इस कारण स्थिति

बहुत विषम और विसंगत बन गई है। संक्षेप में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाववश भारतीय संस्कृति परिवेश बैचेन दिखाई देता है। कला, संगीत तथा विद्या टूटती हुई नजर आ रही है।

- आजादी के पश्चात भारतीय राजनीति ही नहीं समाज भी प्रभावित हुआ है। स्वाधीन भारतीय समाज को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इनमें से कुछ समस्याएँ उसे परंपरागत रूप से विरासत में प्राप्त हुई है और कुछ पाश्चात्य जगत् के प्रभाव से आ गयी है। राजनैतिक आजादी को अंतिम लक्ष्य मानकर भारतीय समाज संतुष्ट हो गया था। लेकिन उसके उपभोग के लिए समाज में अपेक्षित वातावरण का निर्माण न हो सका। गांधीजी ने लोकतंत्र को गाँव–गाँव तक पहुँचाने पर बल दिया था, उनकी ग्राम–स्वराज्य की भावना पूरी न हो सकी। ग्रामीण–जीवन को उन्नत करने के प्रयत्न किये गये, किंतु उससे गाँवो की सादगी एवं सरलता ही नष्ट हुई। ग्राम हो या शहर, राजनीति ने सबको प्रभावित किया है। स्वार्थ,अहम्, फरेब, धूर्तता आदि दुगुर्ण समाज में फैले हे। राजनीति के कारण समाज में जातिवाद का जहर तेज हुआ है, सांप्रदायिक वैमनस्यता की खाई और चौड़ी हुई है तथा असामाजिक तत्वों के हौसले बुलंद हुए है। आधुनिक व्यंग्यकारों की दृष्टि इस ओर भी गयी है।
- आजादी के पश्चात् भारत में अनेक परिवर्तन हुए जिसमें औद्योगिक संस्थानो की स्थापना हुई है। नागरिकरण का आकर्षण बढ़ा है। रेल, संचार सुविधाओं का विस्तार हुआ है। प्रचार–प्रसार के माध्यमों में वृध्दि हुई है। शिक्षा के बढते प्रभाव ने भी समाज को नूतन दृष्टि प्रदान की है। राष्ट्र तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर हुआ और हम दुनिया के अधिक संपर्क में आ गये है। इस के परिणाम स्वरूप हमारे जीवन–फलक का विस्तार हुआ है। एक ओर आजादी ने व्यक्ति की आकांक्षाओं को जगाया तो दूसरी ओर सिनेमा की रंगीन ने और संचार साधनों ने उसे सोचने को पंख दिये है। नागरी सभ्यता की चक्काचौंध ने उसकी चाहतो को बढ़ाया है। अब उसकी दुनिया आम ग्राम्य जीवनवाली नहीं रही है। रहन–सहन, खान–पान, सब में

परिवर्तन की लालसा ने उसे बैचेन कर दिया है। यथार्थ का सामना करने की उसकी शक्ति भी नष्ट हो चली है, चाहतों को अंजाम देने का सामर्थ्य उसमें था ही नहीं। इस प्रकार उसका जीवन उपहास बनकर रह गया है। आधुनिक सामाजिक परिस्थिति द्रुत गति से चूर होने लगी है।

- भारत–वर्ष पूर्णतः परिवर्तन कर भँवर में पड गया है। अंग्रेजो के आगमन से पहले भारत मुख्यतया उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग में विभक्त था। विप्लवन के उपरांत उच्चवर्ग का पतन हुआ और लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति से मध्यवर्ग का उदय हुआ जो पैतृक संपत्ति के अभाव में बाहर जाकर नौकरी करके अपनी आजीविका चलाने लगा। आजादी के पश्चात् आज भी भारत में १) उच्च वर्ग २) मध्य वर्ग ३) निम्न वर्ग दिखाई देते हैं। आज के समाज में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्या–समस्या, जाति–पाँति और अस्पृश्यता, आर्थिक दुष्चक्र, बेकारी, पर्याप्त शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी जब कुण्ठा और निराशा भर जाती है। पिता–पुत्र के संबंधो में टकराहट, पति–पत्नी के संबंध में तनाव, समाज में नारियों की विभिन्न समस्याएँ पैदा हो गयी है। सामाजिक विकृतियों का प्रभाव हमारे आज के सामाजिक संबंधो पर स्पष्ट दिखाई देता है। इन विकृतियों के कारण घर परिवार, कार्यालय आदि में अनेकानेक कारणों से जो विसंगतियाँ उत्पन्न होती है, ऐसी परिस्थितियों को ही व्यंग्यकारने अपने कथ्य का विषय बनाया हैं।

- सामाजिक संबंधों में टकराहट पर व्यंग्यकार ने प्रचुर मात्रा में व्यंग्य किया है। आज आदमी की महत्वाकांक्षाएँ बढ़ गई हैं, प्रतियोगिता बढ़ गई है, वह अपने दो हाथो में समूची दुनिया की दौलत और शोहरत को समेट लेना– चाहता है। उसकी यह आकांक्षा भी है कि, उसे केवल उसे ही वह सब कुछ प्राप्त हो, अन्य किसी को कुछ न मिले। अभिलाषा पूर्ति के लिए मनुष्य के प्रयत्न उसके बौनेपन को उजागर कर देते है, एवं वह उपहास का पात्र बन जाता है। आधुनिककरण की वैभव लालसा, सामाजिक–विडंबना नारी मुक्ति की कामना को दूरदर्शन आदि प्रचार–तंत्र माध्यमों

पर ऐसे दिखाया जाता है कि इस कारण पति–पत्नी के संबंधो को गहराई तक प्रभावित किया है। महिलाओं की वाचालता तथा उनकी बकवादी वृत्ति से कभी–कभी पति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु पत्नी को साधन के रूप में उपयोग करने की परंपरा भी इन दिनों चल पड़ी है। परिवार के सारे सूत्र सास के हाथों में केंद्रित होते है, किसी भी स्त्री को सास की भूमिका में ही अपने स्त्रीत्व की पूर्णता प्राप्त होती है। कितनी भी वात्सल्यमयी माँ हो, सासत्व की सत्ता मिलते ही उसकी नस–नस में रौद्र बीभत्स और भयानक रस की अविरल धारा बहने लगती है। निष्कर्षतः पिता–पुत्र, सास–बहु के परस्पर संबंधो में स्वार्थ एवं अहं की टकराहटों के कारण बदलाव अया है। परिणामतः इन परस्पर संबंधो पर ही आज प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है। माता–पिता, पिता–पुत्र, पति–पत्नी, सांस–बहू, भाई–भाई आदि सारे संबंध स्वार्थ की कसौटी पर कसे जाने लगे हैं। इसलिए व्यंग्यकार रिश्तों पर प्रचूर मात्रा में व्यंग्य करते है।

- आज देश की सत्ता पर नीच प्रवृत्तिवाले सत्ता लोलूप, स्वार्थी एवं निकम्मे लोगों ने कब्जा कर लिया हैं। वे जनता के सुख–दुःख के प्रति, उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनशील नहीं है। जहाँ शासन तंत्र–भ्रष्ट हो, जनता में अकर्मण्यता तथा मिथ्या संतोष की भावना घर कर लेती है, वहाँ अनेक समस्याएँ होती है। बेरोजगारी, दहेज समस्या आदि पर व्यंग्यकारने अपने व्यंग्य बाणों से निशाना बनाया है। समाज और कार्यालय का संबंध हर दिन का होता है, कार्यालयों में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ दिखाई देती है, जैसे भ्रष्टाचार ने राजमान्यता प्राप्त कर ली है, एवं सरकारी दफ्तरों में सर्वत्र भ्रष्टाचार का ही शासन है। सरकारी कर्मचारियों में 'कम काम अधिक दाम' ने जोर पकड लिया है। कार्यालयीन अधिकारी, अस्पताल, पुलिस, रेल एवं बस, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी तथा न्याय व्यवस्था की कार्यालयीन विसंगतियों को व्यंग्यकारने लक्ष्य बनाया है।

- भारत को अनेक राष्ट्रीय, आंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ा है। आजादी का लक्ष्य हासिल करने में कठिन एवं लंबी, यात्रा करनी पड़ी है। आजादी के पश्चात् भारत के सामने अनेक समस्यायें खडी थी। जैसे भारत को अखण्ड बनाने के लिए राज्यों का विलीनिकरण किया गया। कुछ रियासतों को भारतीय प्रांतो में मिला दिया गया। कुछ प्रांतों को पृथक भी बनाया गया। इसी के साथ–साथ भारत देश का संविधान बनाने का कार्य संपन्न होने जा रहा था। प्रजातंत्रवादी शासन प्रणाली को २६ जनवरी, १९५० को अपनाया गया। प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में १९६४ तक नेहरूजीने देश की बागडोर सँभाली। पं. जवाहरलाल नेहरूजी के निधन के पश्चात् लालबहादूर शास्त्री प्रधानमंत्री बने 'भारत के भविष्य के लिए कुछ सोच–विचार करते समय सितंबर १९६५ में भारत–पाकिस्तान युध्द छिड गया। भारत–पाक युध्द में देशवासियों ने राष्ट्रीय एकता, त्याग, एवं बलिदान का अभूतपूर्व परिचय दिया। शास्त्रीजी के पश्चात् भारतीय राजनीति रूपी सरिता शांत–मंथर गति को छोड़कर हर–हराती इठलाती कल–कल निनादनी वेगवती बरसाती धारा के प्रवाह में बह–चली जिसे आने वाले समय में इंदिरा गांधी युग के नाम से जाना जाता है। श्रीमती इंदिरा गांधी के अवसान पर उनके जेष्ठ पुत्र श्री. राजीव गांधी प्रधानमंत्री की गद्दी पर बैठे। राजनीति के क्षेत्र में अनुभवहीन कहने वाले भी उनकी साफ सुथरी कार्यशैली के प्रशंसक बन गये। गांधीजी ने आजादी को गाँव–गाँव तक पहुँचने पर बल दिया। उनकी ग्राम स्वराज्य की भावना पूरी न हो सकी। वाजपेयी से मनमोहनसिंग तक के काल में दलबदलू प्रवृत्ति, राजनैतिक भ्रष्टाचार, राजनैतिक लोगों के इस कार्य व्यापार का रहस्य उद्घाटन किया है। सत्ता के लिए बेईमानी करने वालों पर व्यंग्यकारने व्यंग्य किया है। राजनैतिक क्षेत्र पर कसकर आघात किए है।

- प्रजातंत्र भी आखिर तंत्र ही होता है, प्रत्यक्ष रूप में गूँगे, बहरों की तरह चलता है। उसको सफल बनाने को ढेल पीटते है, ऐसा होने से प्रजातंत्र कभी सफल नहीं हो

सकता। सत्ताधारी पार्टियाँ सत्ता में आते ही अपना असली रूप दिखाने लगती है। चुनाव के समय जो वादे किए थे, उसको वे भूल जाते है। सत्ता में आते ही वे अपनी–अपनी स्वार्थ–सिध्दि में लिप्त हो जाते है। सत्ता में आते ही समाज की समस्या सुलझाने का कार्य करना चाहिए। लेकिन कुर्सी मिलने के पश्चात् खुद की समस्या सुलझाने का कार्य किया जाता है। संसद एवं विधान भवन लोगों का आधार स्तंभ होता है। यहाँ देश की और राज्यों की समस्याओं पर विचार–विनिमय होना चाहिए। परंतु वहाँ वास्तव में जो बहस होती है, वह निरर्थक होती है। कुछ सोते रहते है। यहाँ गाली–गलोज होती है, जूतों–चपलों तक का प्रवृत्ति यह सबसे बड़ी विसंगति एवं विकृति रही है। दल–बदल न सिध्दांतो के आधार पर किया जाता है, न ही नीति के आधार किया जाता है। वह सिर्फ अवसरवादिता के आधार पर किया जाता है। भारतीय चुनावों में विकृति का आरंभ उम्मीद्वारों के चयन से ही होता है। चुनाव में तरह–तरह के हथकण्डों का प्रयोग किया जाता है। वोटों को खरीदा जाता है। चुनाव एक खेल बन चुका है, सफल गुण्डे आज देश के नेता बनते जा रहे है। व्यंग्यकार ने उन्हे अपना लक्ष्य बनाते हुए उस संदर्भ में सोचने की चेतावनी दी है।

- भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार का बोलबाला है, समस्त–जीवन को भ्रष्टाचार ने जकड़कर रखा है। राजनीतिक में भाई–भातीजावाद भी इतना बढाया है कि, किसी भी पद के लिए योग्यता या प्रतिभा को नहीं देखा जाता, रिश्तेदारी और चापलूसी आज योग्यता बन गई है। इसी कारण भाई–भातीजावाद को बढ़ावा मिल रहा है। आज के युग में व्यंग्य में अत्याधिक सूक्ष्मता, वक्रता, तीव्रता, मर्मस्पर्शिता, परिहास, चोट, आलोचना, पैनापन आदि विशेषताओं का प्रयोग करके व्यंग्यकारने राजनीतिक लोगों के कार्य व्यापार का रहस्य उद्घाटित किया है। और सत्ता के लिए बेईमानी कर कृतघ्न होने वालों पर आघात किये है। और पाठकों को भ्रष्ट राजनीतिक के संदर्भ में सोचने की चेतावनी दी है।